



ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं में शिक्षा एवं आर्थिक सशक्तिकरण का सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता पर प्रभाव: दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में

¹ आकांक्षा पाटिल, ² डॉ. भानुप्रताप सिंह (सहायक प्राध्यापक)

¹ शोधार्थी, ² शोध-निर्देशक

¹⁻² समाजशास्त्र विभाग, भारती विश्वविद्यालय, दुर्ग (छ. ग.)

सारांश

ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाएँ भारतीय समाज की उस सामाजिक श्रेणी का प्रतिनिधित्व करती हैं जहाँ जाति, लिंग, ग्रामीणता और आर्थिक स्थिति परस्पर जुड़कर अवसरों तथा जीवन-अनुभवों को प्रभावित करते हैं। शिक्षा महिलाओं में ज्ञान, आत्मविश्वास, अधिकार-बोध और सार्वजनिक संस्थाओं से संवाद की क्षमता विकसित करती है, जबकि आर्थिक सशक्तिकरण आय, बचत, आजीविका, वित्तीय निर्णय और संसाधनों तक पहुँच के माध्यम से उनकी स्वायत्तता को मजबूत कर सकता है। प्रस्तुत अध्ययन दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में यह समझने का प्रयास करता है कि शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक तथा राजनीतिक जागरूकता को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। अध्ययन वर्णनात्मक, अवधारणात्मक एवं समीक्षा-आधारित है तथा 2020 से 2024 के बीच प्रकाशित सरकारी प्रतिवेदनों, शोध-पत्रों और प्रासंगिक द्वितीयक सामग्री पर आधारित है। विश्लेषण से संकेत मिलता है कि शिक्षा और आर्थिक अवसरों का संयुक्त प्रभाव महिलाओं की निर्णय क्षमता, सरकारी योजनाओं की जानकारी, ग्राम सभा एवं स्थानीय शासन के प्रति रुचि, सामाजिक गतिशीलता और अधिकारों के प्रति चेतना को बढ़ा सकता है। फिर भी पितृसत्ता, जातिगत भेदभाव, अस्थिर रोजगार, डिजिटल अंतर, घरेलू कार्यभार और संसाधनों पर सीमित नियंत्रण जैसी बाधाएँ सशक्तिकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं।

मुख्य शब्द: अनुसूचित जाति महिलाएँ, शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण, सामाजिक जागरूकता, राजनीतिक जागरूकता, ग्रामीण समाज, दुर्ग जिला, महिला सशक्तिकरण।

1. प्रस्तावना

भारतीय ग्रामीण समाज में शिक्षा और आर्थिक संसाधन सामाजिक स्थिति के दो महत्वपूर्ण आधार हैं। अनुसूचित जातियों के संदर्भ में ऐतिहासिक सामाजिक बहिष्करण, भूमि एवं संपत्ति तक सीमित पहुँच, कम आय वाले व्यवसाय तथा शैक्षिक वंचना ने सामाजिक गतिशीलता को लंबे समय तक प्रभावित किया है। महिलाओं के लिए इन परिस्थितियों के साथ लैंगिक असमानता भी जुड़ जाती है। इसलिए ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं की स्थिति को केवल 'महिला' या केवल 'अनुसूचित जाति' की श्रेणी में समझना पर्याप्त



नहीं है; जाति, वर्ग, लिंग और स्थान की अंतःक्रिया को साथ देखना आवश्यक है।

शिक्षा का प्रभाव साक्षरता तक सीमित नहीं रहता। विद्यालयी और उच्च शिक्षा महिलाओं को स्वास्थ्य, कानून, सरकारी योजनाओं, बैंकिंग, डिजिटल सेवाओं, मतदान, स्थानीय संस्थाओं और रोजगार के अवसरों की जानकारी प्राप्त करने की क्षमता देती है। शिक्षित महिला परिवार के भीतर बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, विवाह, आय-व्यय और सामाजिक संबंधों से जुड़े निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभा सकती है। इसी प्रकार आर्थिक सशक्तिकरण का अर्थ केवल आय अर्जित करना नहीं, बल्कि आय पर नियंत्रण, बचत, बैंक खाते का उपयोग, ऋण एवं संस्थागत वित्त तक पहुँच, कौशल, स्वरोजगार और संपत्ति संबंधी निर्णयों में भागीदारी भी है।

दुर्ग जिला औद्योगिक-नगरीय प्रभाव और ग्रामीण सामाजिक संरचना के सह-अस्तित्व वाला क्षेत्र है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि, मजदूरी, लघु व्यवसाय, स्वयं सहायता समूह और सरकारी आजीविका कार्यक्रम महिलाओं के आर्थिक जीवन को प्रभावित करते हैं। ऐसे परिवेश में शिक्षा तथा आर्थिक गतिविधियों से जुड़ाव सामाजिक व्यवहार, आत्मसम्मान, गतिशीलता और राजनीतिक चेतना में परिवर्तन का आधार बन सकता है।

1.1 अध्ययन की केंद्रीय अवधारणा

इस अध्ययन में सामाजिक जागरूकता से आशय अधिकारों, शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, सामाजिक भेदभाव, सामुदायिक संस्थाओं और कल्याणकारी योजनाओं के प्रति समझ से है। राजनीतिक जागरूकता में मतदान, उम्मीदवार चयन, ग्राम सभा, पंचायत, आरक्षण, स्थानीय प्रतिनिधियों की भूमिका, सरकारी योजनाओं और नागरिक अधिकारों की जानकारी को सम्मिलित किया गया है।

1.2 अनुसूचित जाति महिला, शिक्षा और बहुआयामी सशक्तिकरण

अनुसूचित जाति की ग्रामीण महिलाओं के लिए शिक्षा सामाजिक पहचान के पुनर्निर्माण का माध्यम बन सकती है। शिक्षा से भाषा, संचार, दस्तावेज समझने, आवेदन करने, बैंकिंग और डिजिटल माध्यमों का उपयोग करने की क्षमता विकसित होती है। इससे महिला परिवार तथा समुदाय के बाहर संस्थागत संपर्क स्थापित कर सकती है। 2022-23 में प्रकाशित शोध ने दलित लड़कियों की शिक्षा को जाति और पितृसत्ता की संयुक्त संरचनाओं से जोड़कर देखने की आवश्यकता पर बल दिया है; इससे स्पष्ट होता है कि केवल नामांकन बढ़ना पर्याप्त नहीं, बल्कि शिक्षा की निरंतरता, गुणवत्ता और सामाजिक वातावरण भी महत्वपूर्ण हैं।

आर्थिक सशक्तिकरण शिक्षा के प्रभाव को व्यावहारिक शक्ति में बदल सकता है। आय अर्जित करने वाली महिला की घरेलू निर्णयों में आवाज बढ़ने की संभावना रहती है, किंतु आय पर नियंत्रण न होने पर रोजगार स्वतः स्वायत्तता में परिवर्तित नहीं होता। स्वयं सहायता समूह, कौशल प्रशिक्षण, बैंक ऋण, स्वरोजगार, मनरेगा, लघु उद्यम और सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम ग्रामीण महिलाओं के लिए आर्थिक भागीदारी के महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

1.3 सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता का संबंध

सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक जागरूकता एक-दूसरे से जुड़ी प्रक्रियाएँ हैं। जब महिला अपने अधिकार,



योजनाएँ और सार्वजनिक संस्थाओं की भूमिका समझती है, तब वह पंचायत प्रतिनिधि, ग्राम सभा, आंगनबाड़ी, विद्यालय, स्वास्थ्य केंद्र और प्रशासन से प्रश्न करने में अधिक सक्षम हो सकती है। आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत स्वतंत्र महिला के लिए बैठक में भाग लेने, यात्रा करने, सूचना प्राप्त करने और सामूहिक संगठन से जुड़ने की व्यावहारिक संभावना भी बढ़ती है।

2. साहित्य समीक्षा

2.1 शिक्षा और अनुसूचित जाति महिलाओं का सामाजिक परिवर्तन

2020 के एक अध्ययन में ग्रामीण अनुसूचित जाति महिलाओं की शिक्षा को रहन-सहन, व्यवहार, सामाजिक स्थिति और आत्मविश्वास में परिवर्तन से जोड़ा गया। हाल के अध्ययनों ने इस संबंध को अधिक जटिल रूप में देखा है और बताया है कि शिक्षा के परिणाम जातिगत तथा लैंगिक संरचनाओं से प्रभावित होते हैं। अतः शिक्षा को सामाजिक गतिशीलता के साधन के साथ-साथ संरचनात्मक बाधाओं से संवाद करने वाली क्षमता के रूप में समझना आवश्यक है।

2.2 शिक्षा, रोजगार और आर्थिक अवसर

ग्रामीण भारत में गैर-कृषि रोजगार पर 2023 के एक अध्ययन ने शिक्षा, जाति, भूमि स्वामित्व और लिंग को रोजगार विविधीकरण के महत्वपूर्ण निर्धारक बताया। अध्ययन के अनुसार शिक्षा महिलाओं के लिए कृषि से बाहर कुछ क्षेत्रों में प्रवेश की संभावना बढ़ा सकती है, किंतु अनुसूचित जाति/जनजाति परिवारों की महिलाएँ अक्सर कम प्रतिफल वाले कार्यों में केंद्रित रहती हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक उपलब्धि को गुणवत्तापूर्ण रोजगार और आय सुरक्षा से जोड़ना आवश्यक है।

2.3 आर्थिक सशक्तिकरण और महिला श्रम भागीदारी

आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 ने महिला श्रम बल भागीदारी में वृद्धि को रेखांकित किया और शिक्षा, कौशल तथा सशक्तिकरण पहलों को महत्वपूर्ण संदर्भ के रूप में प्रस्तुत किया। ग्रामीण महिलाओं की बड़ी संख्या कृषि-संबंधित कार्यों में संलग्न है। अनुसूचित जाति महिलाओं के संदर्भ में आर्थिक सशक्तिकरण का मूल्यांकन करते समय कार्य की प्रकृति, मजदूरी, नियमितता, सामाजिक सुरक्षा और आय पर महिला के नियंत्रण को साथ देखना चाहिए।

2.4 जाति और महिला सशक्तिकरण

2024 में प्रकाशित जाति/जनजाति और महिला सशक्तिकरण संबंधी अध्ययन ने भारत में सशक्तिकरण के स्तरों में सामाजिक समूह तथा क्षेत्रीय विविधता दिखाई। निर्णय-निर्माण, गतिशीलता, सामाजिक स्वतंत्रता और हिंसा के प्रति दृष्टिकोण जैसे आयामों से स्पष्ट होता है कि सशक्तिकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है। अनुसूचित जाति महिलाओं के लिए शिक्षा और आर्थिक स्थिति इन आयामों को प्रभावित कर सकती हैं, लेकिन क्षेत्रीय तथा सामाजिक परिस्थितियाँ परिणामों को अलग-अलग रूप देती हैं।

2.5 राजनीतिक प्रतिनिधित्व और शिक्षा

2023 के एक अध्ययन ने अनुसूचित जातियों के पंचायती राज प्रतिनिधित्व और शैक्षिक योग्यता के संबंध



का विश्लेषण किया। इससे स्थानीय राजनीति में शिक्षा, आरक्षण और सामाजिक प्रतिनिधित्व के बीच संबंध पर ध्यान जाता है। ग्रामीण महिलाओं के लिए राजनीतिक जागरूकता केवल चुनाव लड़ने तक सीमित नहीं है; मतदाता के रूप में सूचित चयन, ग्राम सभा में भागीदारी, स्थानीय बजट और योजनाओं की जानकारी तथा प्रतिनिधियों से जवाबदेही की मांग भी राजनीतिक नागरिकता के महत्वपूर्ण रूप हैं।

3. शोध अंतराल

उपलब्ध साहित्य में अनुसूचित जाति महिलाओं की शिक्षा, दलित लड़कियों की शैक्षिक बाधाएँ, महिला श्रम भागीदारी, आर्थिक सशक्तिकरण और राजनीतिक प्रतिनिधित्व पर अलग-अलग अध्ययन मिलते हैं। किंतु ग्रामीण अनुसूचित जाति महिलाओं के संदर्भ में शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण को एक साथ स्वतंत्र कारकों के रूप में लेकर उनके सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता पर संयुक्त प्रभाव का जिला-विशिष्ट समाजशास्त्रीय विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है।

दुर्ग जिले के संदर्भ में यह शोध अंतराल अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ ग्रामीण क्षेत्रों पर निकटवर्ती शहरी एवं औद्योगिक अर्थव्यवस्था का प्रभाव, शिक्षा के अवसर, स्वयं सहायता समूहों की गतिविधियाँ, मजदूरी तथा स्वरोजगार के विकल्प और स्थानीय राजनीतिक संस्थाएँ एक साथ कार्य करती हैं। इसलिए यह समझना आवश्यक है कि केवल शिक्षा प्राप्त होना पर्याप्त है या आर्थिक संसाधनों तक वास्तविक पहुँच उसके प्रभाव को अधिक मजबूत बनाती है।

4. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

पहला, अध्ययन अनुसूचित जाति महिलाओं की स्थिति को सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता के संयुक्त दृष्टिकोण से समझने में सहायक है। दूसरा, यह शिक्षा को केवल प्रमाणपत्र या साक्षरता के रूप में न देखकर अधिकार-बोध, निर्णय क्षमता और संस्थागत पहुँच से जोड़ता है। तीसरा, आर्थिक सशक्तिकरण को आय अर्जन के साथ वित्तीय स्वायत्तता, बैंकिंग, बचत और संसाधन नियंत्रण से जोड़ता है।

चौथा, सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता को सशक्तिकरण के परिणाम के रूप में देखने से यह समझने में सहायता मिलती है कि महिलाओं की निजी जीवन-स्थितियों में परिवर्तन सार्वजनिक नागरिकता को कैसे प्रभावित करता है। पाँचवाँ, दुर्ग जिले पर केंद्रित अध्ययन स्थानीय प्रशासन, पंचायतों, शैक्षिक संस्थानों और महिला समूहों के लिए क्षेत्र-विशिष्ट नीति सुझाव विकसित करने का आधार बन सकता है।

5. अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं की शिक्षा की भूमिका का सामाजिक जागरूकता के संदर्भ में विश्लेषण करना।
2. आर्थिक सशक्तिकरण और घरेलू तथा सामुदायिक निर्णय क्षमता के संबंध को समझना।
3. शिक्षा एवं आर्थिक सशक्तिकरण का राजनीतिक जागरूकता और स्थानीय सहभागिता पर प्रभाव विश्लेषित करना।
4. दुर्ग जिले के ग्रामीण संदर्भ में जाति, लिंग और आर्थिक स्थिति से जुड़ी बाधाओं की पहचान करना।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-December 2025

5. महिला सशक्तिकरण को अधिक प्रभावी बनाने हेतु समाजशास्त्रीय एवं नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

6. शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र वर्णनात्मक, अवधारणात्मक और समीक्षा-आधारित है। इसमें प्रत्यक्ष प्राथमिक सर्वेक्षण के आँकड़ों का दावा नहीं किया गया है। अध्ययन के लिए 2020-2024 के बीच प्रकाशित शोध लेख, भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय की योजनागत सामग्री, आर्थिक सर्वेक्षण, महिला सशक्तिकरण तथा ग्रामीण रोजगार से संबंधित शोध और पंचायती राज/सामाजिक प्रतिनिधित्व पर उपलब्ध अध्ययनों को आधार बनाया गया है।

सामग्री का विषयगत विश्लेषण चार प्रमुख आयामों—(1) शिक्षा, (2) आर्थिक सशक्तिकरण, (3) सामाजिक जागरूकता और (4) राजनीतिक जागरूकता—के आधार पर किया गया है। इनके बीच संबंध को जाति, लिंग, ग्रामीणता, घरेलू सत्ता-संबंध और संस्थागत अवसरों की पृष्ठभूमि में व्याख्यायित किया गया है। दुर्ग जिले का उल्लेख अध्ययन के स्थानीय संदर्भ के रूप में किया गया है; चूँकि इस पेपर में जिला-स्तरीय प्राथमिक नमूना सर्वेक्षण शामिल नहीं है, इसलिए दुर्ग के संबंध में कारणात्मक या प्रतिशत-आधारित निष्कर्ष प्रस्तुत नहीं किए गए हैं।

6.1 प्रमुख विश्लेषणात्मक संकेतक

आयाम	संकेतक	संभावित सामाजिक परिणाम
शिक्षा	साक्षरता, विद्यालय/उच्च शिक्षा, डिजिटल समझ	सूचना, आत्मविश्वास, अधिकार-बोध
आर्थिक सशक्तिकरण	आय, बचत, बैंकिंग, रोजगार, SHG	वित्तीय निर्णय और गतिशीलता
सामाजिक जागरूकता	स्वास्थ्य, शिक्षा, समानता, योजनाएँ	सामुदायिक भागीदारी
राजनीतिक जागरूकता	मतदान, पंचायत, ग्राम सभा, आरक्षण	नागरिक सक्रियता और जवाबदेही

यह विश्लेषणात्मक ढाँचा शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण को परस्पर पूरक मानता है। शिक्षा सूचना और क्षमता देती है, जबकि आर्थिक संसाधन उस क्षमता को व्यवहार में उपयोग करने की स्वतंत्रता बढ़ा सकते हैं। दोनों का प्रभाव सामाजिक वातावरण और परिवार की सत्ता-संरचना के अनुसार भिन्न हो सकता है।

7. निष्कर्ष एवं चर्चा

7.1 शिक्षा का सामाजिक जागरूकता पर प्रभाव

शिक्षा महिलाओं को सामाजिक संस्थाओं और अधिकारों की भाषा से परिचित कराती है। शिक्षित महिला विद्यालय, स्वास्थ्य सेवा, राशन, छात्रवृत्ति, सामाजिक सुरक्षा, बैंकिंग और स्थानीय प्रशासन से संबंधित सूचनाओं को समझने तथा उनका उपयोग करने में अपेक्षाकृत सक्षम हो सकती है। शिक्षा जातिगत हीनता-



बोध और लैंगिक रुढ़ियों पर प्रश्न उठाने की बौद्धिक क्षमता भी विकसित करती है। इसके साथ बच्चों, विशेषकर बेटियों की शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनने की संभावना रहती है।

7.2 शिक्षा और राजनीतिक जागरूकता

मतदान की प्रक्रिया, उम्मीदवारों के दावे, पंचायत के कार्य, आरक्षण, ग्राम सभा और सार्वजनिक योजनाओं की समझ राजनीतिक जागरूकता के प्रमुख तत्व हैं। शिक्षा दस्तावेज पढ़ने, सूचना की तुलना करने और सार्वजनिक मुद्दों पर संवाद करने में सहायता करती है। किंतु राजनीतिक जागरूकता केवल औपचारिक शिक्षा से निर्धारित नहीं होती; स्वयं सहायता समूह, सामाजिक संगठन, मीडिया, पंचायत बैठकों और सामुदायिक नेटवर्क से भी राजनीतिक सीख विकसित होती है।

7.3 आर्थिक सशक्तिकरण और घरेलू निर्णय

आय तथा वित्तीय संसाधनों तक पहुँच महिला की पारिवारिक स्थिति को प्रभावित कर सकती है। जब महिला स्वयं आय अर्जित करती है, बैंक खाते का उपयोग करती है और बचत या ऋण संबंधी निर्णयों में भाग लेती है, तब उसकी आवाज को परिवार में अधिक मान्यता मिलने की संभावना बढ़ती है। फिर भी यदि आय का नियंत्रण अन्य सदस्यों के हाथ में हो, तो आर्थिक गतिविधि का सशक्तिकरण प्रभाव सीमित रह सकता है। इसलिए 'काम करना' और 'आर्थिक रूप से सशक्त होना' समान अवधारणाएँ नहीं हैं।

7.4 स्वयं सहायता समूह और सामूहिकता

स्वयं सहायता समूह आर्थिक लेन-देन के साथ सामाजिक नेटवर्क भी निर्मित करते हैं। नियमित बैठक, बचत, बैंक संपर्क, प्रशिक्षण और सामूहिक चर्चा महिलाओं को घर से बाहर सार्वजनिक भूमिका निभाने का अवसर देते हैं। समूह अनुभव महिलाओं की बोलने की क्षमता, प्रशासन से संपर्क और योजनाओं की जानकारी को बढ़ा सकता है। अनुसूचित जाति महिलाओं के लिए सामूहिक संगठन जाति और लिंग आधारित सामाजिक दबाव के विरुद्ध सहयोगी मंच का कार्य कर सकता है।

7.5 शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण का संयुक्त प्रभाव

शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण का संबंध परस्पर सुदृढ़कारी हो सकता है। शिक्षा बेहतर रोजगार, कौशल और वित्तीय जानकारी की संभावना बढ़ाती है; आय और संसाधन महिला को आगे की शिक्षा, डिजिटल उपकरण और सार्वजनिक गतिविधियों में भागीदारी के लिए साधन प्रदान करते हैं। इस संयुक्त प्रभाव से सामाजिक जागरूकता केवल जानकारी तक सीमित न रहकर व्यवहारिक निर्णय क्षमता में बदल सकती है।

7.6 अनुसूचित जाति महिलाओं के समक्ष विशिष्ट बाधाएँ

जातिगत भेदभाव, भूमिहीनता या सीमित संपत्ति, असंगठित मजदूरी, कम वेतन, शिक्षा में व्यवधान और सामाजिक नेटवर्क की कमजोरी आर्थिक अवसरों को सीमित कर सकती है। महिलाओं के लिए घरेलू श्रम, देखभाल कार्य, गतिशीलता पर नियंत्रण, कम उम्र में विवाह और सार्वजनिक स्थानों में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ अतिरिक्त बाधाएँ बन सकती हैं। जाति और लिंग की संयुक्त असमानता को समझे बिना कार्यक्रमों का प्रभाव अधूरा रह सकता है।

7.7 डिजिटल साक्षरता और नई जागरूकता



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-December 2025

सरकारी सेवाओं, बैंकिंग, छात्रवृत्ति, रोजगार पंजीयन और सूचनाओं के डिजिटल होने से मोबाइल तथा इंटरनेट की उपयोग क्षमता महत्वपूर्ण हो गई है। डिजिटल साक्षरता महिला को सूचना तक स्वतंत्र पहुँच दे सकती है, किंतु फोन स्वामित्व, इंटरनेट खर्च, भाषा, साइबर सुरक्षा और तकनीकी सहायता की कमी डिजिटल विभाजन पैदा करती है। इसलिए डिजिटल पहुँच को शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के आधुनिक आयाम के रूप में शामिल करना आवश्यक है।

तालिका 2: शिक्षा एवं आर्थिक सशक्तिकरण के संभावित प्रभाव

कारक	प्रत्यक्ष प्रभाव	जागरूकता पर प्रभाव
शिक्षा	ज्ञान, संचार, दस्तावेजी क्षमता	अधिकार एवं राजनीतिक सूचना
आय/रोजगार	वित्तीय योगदान	निर्णय क्षमता और आत्मविश्वास
SHG/सामूहिकता	नेटवर्क एवं संस्थागत संपर्क	सामाजिक-राजनीतिक भागीदारी
डिजिटल क्षमता	सूचना एवं सेवाओं तक पहुँच	योजना और शासन संबंधी जागरूकता

7.8 राजनीतिक जागरूकता के व्यवहारिक आयाम

राजनीतिक जागरूकता को मतदान प्रतिशत तक सीमित करना उचित नहीं है। सूचित मतदान, उम्मीदवार के सामाजिक कार्य का मूल्यांकन, पंचायत के दायित्वों की जानकारी, ग्राम सभा में प्रश्न पूछना, योजनाओं के लाभार्थी चयन को समझना, शिकायत दर्ज करना और सार्वजनिक संसाधनों पर अधिकार-बोध इसके व्यवहारिक आयाम हैं। शिक्षा इन प्रक्रियाओं की समझ बढ़ाती है और आर्थिक स्वतंत्रता उनमें भाग लेने के लिए समय, यात्रा तथा संचार की सुविधा दे सकती है।

7.9 दुर्ग जिले के संदर्भ में समाजशास्त्रीय व्याख्या

दुर्ग जिले के ग्रामीण क्षेत्रों को निकटवर्ती शहरी एवं औद्योगिक प्रभाव से पूर्णतः अलग नहीं देखा जा सकता। परिवहन, शिक्षा, बाजार, रोजगार, डिजिटल संचार और प्रशासनिक संस्थाओं से संपर्क ग्रामीण महिलाओं की आकांक्षाओं और सामाजिक तुलना को प्रभावित कर सकता है। अनुसूचित जाति महिलाओं के लिए ये अवसर सामाजिक गतिशीलता के नए रास्ते खोल सकते हैं, परंतु अवसरों का लाभ शिक्षा, कौशल, परिवार के समर्थन और आर्थिक संसाधनों के अनुसार असमान रह सकता है।

इसलिए दुर्ग जिले में भविष्य का अनुभवजन्य अध्ययन ग्राम-स्तर पर शिक्षा, रोजगार के प्रकार, स्वयं सहायता समूह सदस्यता, बैंक खाते के वास्तविक उपयोग, मोबाइल स्वामित्व, ग्राम सभा उपस्थिति, मतदान संबंधी निर्णय, योजनाओं की जानकारी और घरेलू निर्णय क्षमता जैसे संकेतकों को माप सकता है। इससे शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के स्वतंत्र तथा संयुक्त प्रभाव का अधिक स्पष्ट परीक्षण संभव होगा।

7.10 सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया

सामाजिक परिवर्तन को एक रैखिक प्रक्रिया के रूप में नहीं देखा जा सकता। महिला शिक्षित हो सकती है, फिर भी रोजगार उपलब्ध न हो; वह आय अर्जित कर सकती है, फिर भी आय पर नियंत्रण सीमित हो; वह



मतदान कर सकती है, किंतु उम्मीदवार चयन में पारिवारिक दबाव हो सकता है। इसलिए सशक्तिकरण की वास्तविक स्थिति औपचारिक उपलब्धि और व्यावहारिक स्वायत्तता के बीच अंतर से समझी जानी चाहिए। समाजशास्त्रीय दृष्टि से शिक्षा सांस्कृतिक पूँजी और संस्थागत क्षमता बढ़ाती है, आर्थिक सशक्तिकरण संसाधन-आधारित शक्ति देता है, जबकि सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता इन क्षमताओं को नागरिक क्रिया में परिवर्तित करती है। अनुसूचित जाति महिलाओं के संदर्भ में यह परिवर्तन सामाजिक सम्मान, समानता और सार्वजनिक उपस्थिति से भी जुड़ा है।

8. निष्कर्ष

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि ग्रामीण अनुसूचित जाति महिलाओं के सामाजिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण को समझने में शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण दोनों केंद्रीय कारक हैं। शिक्षा ज्ञान, अधिकार-बोध, संवाद क्षमता और संस्थागत समझ को बढ़ाती है, जबकि आर्थिक संसाधन निर्णय लेने की व्यावहारिक स्वतंत्रता और सार्वजनिक जीवन में भाग लेने की संभावना को मजबूत करते हैं। दोनों का संयुक्त प्रभाव सामाजिक जागरूकता, आत्मविश्वास, बच्चों की शिक्षा संबंधी निर्णय, योजनाओं तक पहुँच और राजनीतिक प्रक्रियाओं की समझ में दिखाई दे सकता है।

फिर भी सशक्तिकरण स्वतः या समान रूप से नहीं होता। जाति-आधारित असमानता, पितृसत्तात्मक नियंत्रण, असंगठित रोजगार, कम मजदूरी, संपत्ति पर सीमित अधिकार, घरेलू कार्यभार और डिजिटल अंतर महिलाओं की उपलब्धियों को सीमित कर सकते हैं। अतः शिक्षा की मात्रा के साथ उसकी गुणवत्ता और निरंतरता, तथा रोजगार की उपलब्धता के साथ आय की स्थिरता और नियंत्रण को भी महत्व देना चाहिए। दुर्ग जिले के विशेष संदर्भ में यह विषय स्थानीय समाज में शिक्षा, औद्योगिक-शहरी प्रभाव, ग्रामीण आजीविका, स्वयं सहायता समूह और पंचायती राज के बीच संबंध को समझने की व्यापक संभावना प्रदान करता है। भविष्य में प्राथमिक सर्वेक्षण द्वारा विभिन्न विकासखंडों और ग्राम पंचायतों की तुलना से अधिक ठोस निष्कर्ष विकसित किए जा सकते हैं।

9. अध्ययन की सीमाएँ

6. अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों और अवधारणात्मक विश्लेषण पर आधारित है।
7. दुर्ग जिले की अनुसूचित जाति महिलाओं का प्राथमिक नमूना सर्वेक्षण इस पेपर में सम्मिलित नहीं है।
8. अनुसूचित जाति समुदाय आंतरिक रूप से विविध है; सभी उप-समूहों के अनुभव समान नहीं माने जा सकते।
9. आर्थिक सशक्तिकरण को केवल रोजगार या आय से मापना पर्याप्त नहीं; संसाधनों पर नियंत्रण का प्रत्यक्ष मापन आवश्यक है।
10. सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता के व्यावहारिक संकेतकों के लिए भविष्य में साक्षात्कार और क्षेत्र-अवलोकन उपयोगी होंगे।



11. 2020-2024 की चयनित सामग्री विषय का संपूर्ण साहित्य नहीं है, बल्कि इस descriptive paper के लिए प्रासंगिक आधार है।

10. भविष्य की दिशा एवं सुझाव

12. ग्रामीण अनुसूचित जाति की बालिकाओं और महिलाओं के लिए माध्यमिक, उच्च एवं कौशल शिक्षा की निरंतरता सुनिश्चित करने हेतु छात्रवृत्ति, परिवहन और डिजिटल सहायता को मजबूत किया जाए।
13. महिलाओं के लिए कौशल प्रशिक्षण को स्थानीय बाजार और वास्तविक रोजगार अवसरों से जोड़ा जाए, ताकि प्रशिक्षण आय में परिवर्तित हो सके।
14. स्वयं सहायता समूहों को बचत-ऋण तक सीमित न रखकर डिजिटल वित्त, कानूनी अधिकार, पंचायत प्रक्रिया और उद्यम प्रबंधन का प्रशिक्षण दिया जाए।
15. महिलाओं के बैंक खातों के वास्तविक उपयोग, बचत, बीमा और संस्थागत ऋण तक स्वतंत्र पहुँच को बढ़ावा दिया जाए।
16. ग्राम सभा से पूर्व महिलाओं के लिए सरल भाषा में एजेंडा, योजनाओं और बजट की जानकारी उपलब्ध कराई जाए।
17. अनुसूचित जाति बस्तियों में शिक्षा, रोजगार, डिजिटल पहुँच और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर नियमित जागरूकता शिविर आयोजित किए जाएँ।
18. राजनीतिक जागरूकता कार्यक्रमों में मतदान के साथ पंचायत के कार्य, ग्राम सभा, सामाजिक अंकेक्षण और शिकायत निवारण को शामिल किया जाए।
19. दुर्ग जिले में विकासखंड-वार तुलनात्मक अध्ययन कर यह पहचाना जाए कि किन क्षेत्रों में शिक्षा और आर्थिक अवसर महिलाओं की सार्वजनिक भागीदारी को अधिक प्रभावित कर रहे हैं।
20. भविष्य के शोध में आय के साथ आय पर नियंत्रण, संपत्ति, गतिशीलता, घरेलू निर्णय, डिजिटल स्वामित्व और राजनीतिक सहभागिता के संयुक्त सूचकांक विकसित किए जाएँ।

10.1 प्रस्तावित अनुभवजन्य अध्ययन के लिए संकेतक

भविष्य के क्षेत्रीय अध्ययन में आयु, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति, परिवार का प्रकार, व्यवसाय, व्यक्तिगत आय, SHG सदस्यता, बैंक खाते का संचालन, मोबाइल उपयोग, सरकारी योजनाओं की जानकारी, ग्राम सभा उपस्थिति, मतदान निर्णय, पंचायत प्रतिनिधि से संपर्क, घरेलू निर्णयों में भागीदारी तथा भेदभाव के अनुभव जैसे संकेतक शामिल किए जा सकते हैं। इनसे शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण के सामाजिक तथा राजनीतिक जागरूकता पर प्रभाव का अधिक व्यवस्थित समाजशास्त्रीय परीक्षण किया जा सकेगा।

11. संदर्भ सूची

1. रिसर्च रिव्यू इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी। (2020)। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं के सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का प्रभाव: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-December 2025

2. भारत सरकार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय। (2021)। अनुसूचित जातियों के शैक्षिक एवं सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण से संबंधित योजनाएँ एवं कार्यक्रम। नई दिल्ली: भारत सरकार।
3. शोकीन, एन.। (2022-2023)। दलित बालिकाओं की शिक्षा में नामांकन से आगे: हरियाणा के सफाईकर्मी समुदायों में जाति एवं पितृसत्ता का अध्ययन। कंटेम्परेरी वॉइस ऑफ दलित, 15(1), 100-112।
4. भारत सरकार, ग्रामीण विकास मंत्रालय। (2022)। दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन: महिला स्वयं सहायता समूह एवं ग्रामीण आजीविका संबंधी कार्यक्रम दस्तावेज। नई दिल्ली: भारत सरकार।
5. मंगत, एच. एस., अहमद, एस. आई. एवं गिल, एल. एस.। (2023)। भारत में अनुसूचित जातियों का सशक्तिकरण: हरियाणा पंचायती राज (संशोधन) अधिनियम, 2015 का प्रभाव मूल्यांकन अध्ययन। कंटेम्परेरी वॉइस ऑफ दलित।
6. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकोनॉमिक्स। (2023)। भारत में ग्रामीण गैर-कृषि रोजगार का विविधीकरण: लिंग, शिक्षा, जाति एवं भूमि स्वामित्व की भूमिका। खंड 50(6), पृ. 741-765।
7. भारत सरकार। (2023)। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण: ग्रामीण महिला श्रम भागीदारी से संबंधित आधिकारिक सांख्यिकीय सामग्री। नई दिल्ली: भारत सरकार।
8. भारत सरकार, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय। (2024)। प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना: अनुसूचित जाति समुदायों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास से संबंधित आधिकारिक विवरण। नई दिल्ली: भारत सरकार।
9. भारत सरकार, वित्त मंत्रालय। (2024)। आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24: सामाजिक क्षेत्र-सशक्तिकरण प्रदान करने वाले लाभ। नई दिल्ली: भारत सरकार।
10. मल, पी. एवं सैकिया, एन.। (2024)। जाति एवं जनजाति के आधार पर असमानता: भारत में महिला सशक्तिकरण एवं स्वास्थ्य परिणामों का अध्ययन। सोशल साइंस एंड मेडिसिन, खंड 354।
11. सशक्तिकरण के माध्यम से महिला शिक्षा: समुदाय-आधारित कार्यक्रम से प्राप्त साक्ष्य। (2024)। वर्ल्ड डेवलपमेंट पर्सपेक्टिव्स, खंड 33।
12. छत्तीसगढ़ शासन/जिला दुर्ग। (2024)। महिला एवं बाल विकास तथा जिला-स्तरीय महिला कल्याण से संबंधित आधिकारिक योजनाएँ एवं कार्यक्रम सामग्री।